पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.12.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

हरियाणा प्रान्तीय बैठक

रविवार, 07 जनवरी 2018,
प्रातः 11.30 बजे
स्थानः आर्य समाज,
सैक्टर–13, करनाल
मुख्य वक्ताः
राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य
–स्वतन्त्र कुकरेजा, प्रान्तीय अध्यक्ष
–वीरेन्द्र योगाचार्य, प्रान्तीय महामन्त्री

वर्ष-34 अंक-14 पौष-2074 दयानन्दाब्द 193 16 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2017 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.12.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव में गीता कथा व इन्द्रापुरम में 21 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न

गीता का ज्ञान मानव मात्र के लिये कल्याणकारी –आचार्य अखिलेश्वर जी
यज्ञीय भावना से विश्व का कल्याण होगा –ठाकुर विक्रम सिंह

रविवार, 10 दिसम्बर 2017, आर्य समाज, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली में वैदिक विद्धान आचार्य अखिलेश्वर जी की गीता कथा सोल्लास सम्पन्न हुई व पं. लक्ष्मीकांत कंठपाल के मधुर भजन हुए। इस अवसर पर डा.अनिल आर्य ने अपने उद्बोधन में पूरे हिन्दू समाज को संगठित होने का आह्वान किया व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की अपील की। चित्र में–आचार्य अखिलेश्वर जी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,प्रधान श्री रविदेव गुप्ता,श्रीमती प्रवीण आर्या व श्री रामबाबु गुप्ता। कवि विजय गुप्त का कविता पाठ सभी ने पसन्द किया।

गुरूकुल गौतम नगर में आर्य सम्मेलन व गुरूकुल खेड़ाखुर्द में उत्सव सम्पन्न

शनिवार, 9 दिसम्बर 2017, दिल्ली के सुप्रसिद्ध गुरूकुल गौतम नगर में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। डा.महावीर (हरिद्वार), आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय, स्वामी श्रद्धानन्द जी का ओजस्वी उद्बोधन हुआ व पं.सत्यपाल पाथिक के मधुर भजन हुए। चित्र में समारोह अध्यक्ष श्री रतन शास्त्री का स्वागत करते स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डा. अनिल आर्य, श्री आनन्द कुमार, श्री रविदेव गुप्ता, श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी, प्रि.श्यामलाल आर्य, वेदप्रकाश शास्त्री, डा. पूर्णसिंह डबास व कुशल संचालन करते संयोजक श्री चतरसिंह नागर। द्वितीय चित्र–गुरूकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली देहात के कार्यकम में डा. अनिल आर्य गुरूकुल के मंत्री श्री मनोज मान व आचार्य सुधांशु जी का आर्य सम्मेलन का निमन्त्रण देते हुए। साथ में युवा उद्घोष के प्रबन्धक श्री दिनेशसिंह आर्य, श्रीमती प्रवीन आर्या व विवेक अग्निहोत्री।

आर्य समाज व आर्ष गुरूकुल, सैक्टर–33, नोएडा का वार्षिक उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 10 दिसम्बर 2017, आर्य समाज, सैक्टर–33, नोएडा का वार्षिक उत्सव श्री आनन्द चौहान की अध्यक्षता व ठाकुर विक्रम सिंह जी के सान्निध्य में सोल्लास सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता के निर्देशन में छात्रों ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया। चित्र में–गुरूकुल के प्राचार्य डा. जयेन्द्र आचार्य को सम्मानित करते परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, बहिन गायत्री मीना (प्रधाना, स्त्री समाज), मंत्री कै.अशोक गुलाटी व प्रधान श्री रविन्द्र सेठ। द्वितीय चित्र में आर्य समाजों के प्रतिष्ठत अधिकारी–अमीरचंद रखेजा, कर्नल कौल, मेजर जनरल आर. एस. भाटिया, शिवकुमार आर्य, वीरेश भाटी, कै. अशोक गुलाटी, ऋषि वर्मा, यशोवीर आर्य, जवाहर भाटिया आदि।

गाजियाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 24 दिसम्बर को

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस रविवार, 24 दिसम्बर 2017 को मनाया जायेगा, प्रातः 8 बजे यज्ञ के पश्चात, प्रातः 10 बजे विशाल शोभा यात्रा शम्भु दयाल वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद से प्रारम्भ होगी व सायं 2 से 4 बजे तक विशाल श्रद्धाजंलि सभा सनातन धर्म इन्टर कालेज, गाजियाबाद में होगी, समारोह की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश आर्य व मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डा.अनिल आर्य रहेंगे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 101 आर्य युवाओं का जत्था श्री सौरभ गुप्ता के नेतृत्व में शोभा यात्रा में भाग लेगा। सभी आर्य युवकों व आर्य जनों से अपील है कि हजारों की संख्या में पंहुच कर समारोह की शोभा बढायें

–सत्यवीर चौधरी–प्रधान

भाषा, ज्ञान और धर्म का आदि स्त्रोत वेद

— मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आज संसार में अनेक भाषायें और अनेक मत–मतान्तर प्रचलित हैं। मत–मतान्तरों को ही लोग धर्म मानने लगे हैं जबकि इन दोनों में अन्तर है। मत–मतान्तर इतिहास के किसी काल विशेष में किसी मनुष्य विशेष द्वारा वा उसके बाद उसके अनुयायियों द्वारा उसके नाम पर उनकी मान्यताओं के आधार पर चलाया जाता है जबकि धर्म का आरम्भ सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से होता है। मत–मतान्तर अपनी त्रुटियों व न्यूनताओं को छुपाने व उसे ईश्वर प्रदत्त बताने के लिए अपने अपने मत को धर्म कह देते हैं। धर्म शब्द संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कृत से ही हिन्दी व विश्व की अन्य भाषायें बनी हैं। हिन्दी में संस्कृत के अधिकांश शब्द बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के स्वीकार कर लिये गये हैं जबकि अन्य भाषायें में संस्कृत शब्दों के स्वरूप कहीं न्यून तो कहीं अधिक बदल गये हैं व कुछ उनके अपने निजी भी शब्द भी हैं। अंग्रेजी व संस्कृत एवं हिन्दी से इतर किसी भाषा में धर्म शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है। धर्म का अर्थ होता है मनुष्यों के द्वारा श्रेष्ठ मनुष्योचित गुण, कर्म व स्वभाव का धारण वा आचरण। इसमें सृष्टिकर्ता व जगतपति ईश्वर का यथार्थ ज्ञान व उसके गुणों को जानकर उसकी उपासना करना भी सम्मिलित है। ईश्वर की यथार्थ उपासना का संसार में प्रमुख ग्रन्थ योग दर्शन है। योग आत्मा को परमात्मा से जोड़ने को कहते हैं। मनुष्य अपनी आत्मा को जब ईश्वर के गुण कर्म व स्वभाव का विचार कर परमात्मा में अपने ध्यान व चिन्तन को स्थिर करता है तो उसे ईश्वरोपासना कहते हैं। उपासना में ईश्वर के मनुष्य जाति पर उपकारों को भी उपासक द्वारा स्मरण किया जाता है। परमात्मा व आत्मा का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि माता–पिता के साथ पुत्र का होता है। जिस प्रकार माता–पिता की सत्य आज्ञाओं का पालन सन्तान के लिए धर्म होता है उसी प्रकार ईश्वर की वेदाज्ञाओं का पालन भी सभी मनुष्यों के धर्म होता है। यह भी ध्यातव्य है कि मनुष्य ने न तो ब्रह्माण्ड बनाया न पृथिवी, समुद्र, नदी, पर्वत, वन और अन्नादि पदार्थ। यह सब ईश्वर ने मनुष्यों के लिए बनाये हैं। मनुष्यों को भी ईश्वर ने ही बनाया है। मनुष्यों के लिए जिस जिस चीज की आवश्यकता थी सब ईश्वर ने मनुष्यों को इस सृष्टि के द्वारा दी हैं। देखने के लिए आंखें चाहिये तो आंखे दी। सुनने के लिए कान चाहियें तो श्रवण इन्द्रिय दी। इसी प्रकार से मनुष्यों को अपने कर्तव्यों का ज्ञान चाहिये। यह भी ईश्वर ने मनुष्यों को सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान देकर कराया है। वेद में ईश्वर ने तृण से लेकर प्रकृति, आत्मा व ईश्वर सभी का यथार्थ सत्य ज्ञान दिया है।

मनुष्यों को स्वस्थ शरीर व उसमें स्वस्थ ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रियों की अत्यावश्यकता है। मनुष्यों कानों से सुनता और मुंह वा वाक् इन्द्रिय से बोलता है। सुनकर ही वह ज्ञान प्राप्त करता है। माता, पिता व आचार्य उसको ज्ञान कराने वाले मुख्य लोग होते हैं। माता–पिता व आचार्य भी अपने अपने माता–पिता व आचार्य से ज्ञान प्राप्त करते हैं। सृष्टि की आदि में परमात्मा अमैथुनी सृष्टि करते हैं। तब आरम्भ में युवा–स्त्री व पुरुष उत्पन्न होते हैं। उनके माता–पिता व आचार्य नहीं होते। परमात्मा ही उस अमैथुनी सृष्टि के सबसे योग्य चार ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान देता है। वही चार ऋषि एक अन्य सबसे योग्य पुरुष ब्रह्मा जी चारों वेदों का ज्ञान कराते हैं। यह ऋषि ही अन्य सभी मनुष्यों के माता–पिता व आचार्य कहलाते हैं। इन्हीं से सभी मनुष्यों को भाषा का ज्ञान सहित वेदों की शिक्षाओं व कर्तव्यों का ज्ञान कराया जाता है। आदि गुरु परमात्मा होता है। वह चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को ज्ञान देता है जिसमें भाषा व उसका ज्ञान भी मुख्य है। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। ज्ञान व भाषा को पृथक नहीं किया जा सकता। ज्ञान होगा तो भाषा अवश्य होगी। संस्कृत हर प्रकार से पूर्ण भाषा है जो ऋषियों को ईश्वर से प्राप्त हुई। लौकिक संस्कृत भाषा वैदिक भाषा का किंचित सरलीकरण है, यह बाद के ऋषियों व विद्वानों द्वारा किया गया है। अतः मूल भाषा भी वेदज्ञान के साथ ही प्राप्त हुई थी व वही किंचित विकारों के साथ व शुद्ध रूप में भी चली आ रही है। देश–काल, भौगोलिक कारणों व मनुष्यों के उच्चारण दोष आदि कारणों से इसमें किंचित परिवर्तन व विकार होना भी सम्भव होता है। अतः इसी प्रकार होते होते सृष्टि की उत्पत्ति के 1.96 अरब वर्ष हो जाने पर संसार में आज सहस्रों भाषायें अस्तित्व में आ गई हैं। सभी भाषाओं की उत्पत्ति प्रायः इसी प्रकार या ऐसे अनेक कारणों से होना सम्भव प्रतीत होती है।

वेदों सहित वेदों पर ऋषियों के उपलब्ध ग्रन्थों का अध्ययन कर धर्म का सर्वांग शुद्ध रूप प्राप्त होता है। यह महाभारत काल व उसके कुछ बाद के वर्षों तक अस्तित्व व व्यवहार में रहा है। इसी को वैदिक धर्म कहते हैं। इसमें किसी अन्य मान्यता व सिद्धान्त को जोड़ने व मिलाने का कहीं अवकाश ही नहीं था। अतः किसी नये धर्म के प्रचलन का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। यह सत्य है कि महाभारत युद्ध के बाद वेद के सत्य अर्थों का यत्र तत्र लोप हो गया था। मूल वेद सुरक्षित रहे और उनकी मध्यकालीन व्याख्यायें भी विद्यमान रहीं। इनमें कुछ भ्रान्तियां थीं। ईसा की अट्ठारहवीं शती में ऋषि दयानन्द सरस्वती (1825–1883) का प्रादुर्भाव रहता है। वह अपने अपूर्व पुरुषार्थ, तप व विद्याबल से वेद व वेदज्ञान को प्राप्त करते हैं और वेदभाष्य सहित अनेक महत्वपूर्ण वैदिक ग्रन्थों की रचना करते हैं। ऋषि दयानन्द जी ने कोई नई बात नहीं कही है। उन्होंने जो कहा व लिखा है वह वही है जो सृष्टि काल के आरम्भ से देश देशान्तर में विद्यमान रहा था परन्तु उनके समय में वह सर्वत्र उपलब्ध नहीं था। उन्होंने उस अलभ्य वैदिक ज्ञान को स्वपुरुषार्थ से प्राप्त किया, अपने विवेक से उसकी परीक्षा व सत्यासत्य का निर्णय किया और उसे देशवासियों के सम्मुख सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने सबल युक्तियों से सिद्ध किया कि मनुष्यों का एक ही धर्म है और वह वेद प्रतिपादित कर्तव्य कर्म व आचरण ही हैं। संसार में जितने भी मत–मतान्तर चल रहे हैं वह अविद्या के काल में चलें जिनकी अब आवश्यकता नहीं है। मत–मतान्तरों में अनेक न्यूनतायें और इनकी अनेक बातें स्त्री व पुरुषों में भेदभाव भी करती हैं। ईश्वरोपासना और वायु–जल–पर्यावरण की शुद्धि हेतु यज्ञ का विधान व विज्ञान की आवश्यक बातों का ज्ञान भी इन मत–मतान्तरों की पुस्तकों में नहीं है। इनसे इन मत के वर्तमान आचार्यों और अनुयायियों की इस रूप में हानि हो रही है कि वह उचित रीति से ईश्वरोपासना एवं अन्य वैदिक कर्मों व अनुष्ठानों को न करने से उससे प्राप्त होने वाले लौकिक व पारलौकिक लाभों से वंचित हो रहे हैं। अतः सभी को वैदिक धर्म की ही शरण लेकर उसी को अपनाना व धारण करना चाहिये। वेदों के आधार पर एक ऐसे समाज, देश व विश्व का निर्माण किया जा सकता है जहां किसी से भेदभाव न होता हो, सब शिक्षित हों, सब अपने अपने कर्तव्यों का पालन करें, सबको उन्नति के समान अवसर मिले, जहां जन्मना जाति व वर्गवाद आदि न हो, लोग मनुष्यों को ही नहीं प्राणीमात्र को ईश्वर की सन्तान व अपना मित्र जानें आदि आदि। वेदों को अपनाकर व उनकी शिक्षाओं के द्वारा विश्व में सुख व शान्ति को स्थापित किया जा सकता है। सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल पर्यन्त तक के 1.960848 अरब वर्षों तक भारत वा आर्यावर्त्त के आर्यों का ही विश्व में एकमात्र निरन्तर वैदिक धर्म पर आधारित चक्रवर्ती राज्य रहा है जहां सब मनुष्य आध्यात्मिक व भौतिक दृष्टि से सुखी थे। तब न कोई मत–मतान्तर था न उसकी आवश्यकता थी। आज भी नहीं है। आवश्यकता केवल विचार, सोच व चिन्तन बदल कर उचित चिन्तन व सत्य निर्णय करने की है।

देश व विश्व में सुख व शान्ति की स्थापना को लक्ष्य में करके वेद का मंथन किया जाना चाहिये और इससे जो रत्न प्राप्त हों उसे देश व विश्व में विस्तार व वितरण कर एक सत्य मत धर्म की स्थापना करनी चाहिये। ऋषि दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश एक ऐसा ही प्रयास था। ऐसे मंथन पहले भी हुए व हुए होंगे। आज इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द ने यह कार्य आरम्भ किया था। यह कार्य अधूरा पड़ा है। यह कार्य केवल ऋषि दयानन्द के अनुयायियों का ही कार्य नहीं है अपितु यह संसार के सभी मनुष्यों का अपना कार्य है। इसी से विश्व का कल्याण होने के साथ आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति हो सकती है और उससे संसार के सभी लोग लाभान्वित हो सकते हैं।

वेद धर्म के आदि स्रोत है। सत्य व यथार्थ धर्म वही है जो वेदों में कहा गया है। वेद से बाहर व उसके विपरीत जो कुछ है वह धर्म नहीं है। अन्य मत मतान्तरों की जो अच्छी बातें हैं वह वेदों से ही वहां गई हैं। उनसे किसी का कोई विरोध नहीं है। मत मतान्तरों की जो अपनी बातें हैं जिनसे संसार के लोगों में भेदभाव होता है और जो अपने मत को अच्छा व दूसरों को निम्नतर मानते हैं, उसमें परिवर्तन व संशोधन होना चाहिये। इसके लिए ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के अन्त में संसार के सभी मनुष्यों के मानने योग्य धार्मिक सिद्धान्तों को लिखा है जिसे उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' नाम दिया है। उसकी भूमिका अतीव महत्वपूर्ण है। उसे लिखकर इस लेख को विराम देंगें। वह लिखते हैं 'सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिस को सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी। इसीलिये उस को सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिस का विरोधी कोई भी न हो सके। यदि अविद्यायुक्त जन अथवा किसी मत वाले के भ्रमाये हुए जन जिस को अन्यथा जानें या मानें उस का स्वीकार कोई भी बुद्धिमान् नहीं करते किन्तु जिस को आप्त अर्थात् सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, परोपकारी, पक्षपातरहित विद्वान मानते हैं वहीं सब को मन्तव्य और जिसको नहीं मानते वह अमन्तव्य होने से प्रमाण के योग्य नहीं होता। अब जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से ले कर जैमिनिमुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं जिन को मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों (देश–विदेश के बन्धुओं) के सामने प्रकाशित करता हूं।' इसके बाद ऋषि दयानन्द जी ने 51 विषयों पर सभी ऋषियों द्वारा मान्य स्वयं के सिद्धान्त लिखे हैं। इससे पूर्व मनुष्य किसे कहते हैं यह भी उन्होंने अपने प्रभावशाली शब्दों में बताया है। अन्य महत्वपूर्ण बातें भी कहीं हैं। इसे सत्यार्थप्रकाश में पढ़ना ही उचित होगा। वेद धर्म का आदि स्रोत है। सृष्टि के अन्त तक वेद ही सर्वाधिक प्रमाणिक रहेंगे। आने वाले समय में संसार के लोग वेदों का महत्व समझेंगे और अपने हित में इस अपनायेंगे। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

आर्य समाज, सुभाष नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सुभाष नगर, पश्चिमी दिल्ली का वार्षिकोत्सव 12,13 व 14 जनवरी 2018 को प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक मनाया जायेगा, स्वामी आर्य वेश जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के प्रवचन होंगे। श्री अजय माकन (प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष), डा. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष,परिषद्), पार्षद सुरेन्द्र सेतिया मुख्य अतिथि होंगे। सभी आर्य जन सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

–संजीव आर्य, संयोजक

कृपया आर्य युवक व आर्य जन ध्यान दें

आगामी 26,27,28 जनवरी 2018 को दिल्ली के रामलीला मैदान अशोक विहार में होने वाले आर्य महासम्मेलन में दिल्ली से बाहर से पधारने वाले आर्य जनों से अनुरोध है कि अपने पंधारने का समय, संख्या से अविलम्ब सूचित करें जिससे आवास आदि का सुन्दर प्रबन्ध किया जा सके एवम् जो आर्य युवक तीन दिन वहीं रहकर सेवा देना चाहते हों वह वीरवार 25 जनवरी 2018 को दोपहर 1.00 बजे समारोह स्थल पर रिपोर्ट करें बिस्तर व आवास व्यवस्था निःशुल्क रहेगी

–अनिल आर्य, मुख्य संयोजक

फरीदाबाद–पलवल आर्य कार्यकर्ता बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जिला फरीदाबाद की विशाल कार्यकर्ता बैठक रविवार, 31 दिसम्बर 2017 को सायं 4.00 बजे आर्य समाज, सैक्टर–19, फरीदाबाद में आर्य नेता श्री मदनलाल तनेजा की अध्यक्षता में होगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के प्रधान डा. गजराजसिंह आर्य मुख्य अतिथि रहेंगे। कृपया सभी आर्य जन समय पर पधार कर उत्साहवर्धन करें

–जितेन्द्रसिंह आर्य, जिला अध्यक्ष **– वीरेन्द्र योगाचार्य,जिला महामंत्री**

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 39 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

वायु प्रदुषण, पर्यावरण शुद्धि व राष्ट्र की सुख समृद्धि हेतु

डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता व आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में

स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

एवम्

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 26,27,28 जनवरी 2018 (शुक्रवार, शनिवार, रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, अशोक विहार फेज-1, दिल्ली-110052

(मेजर ध्यानचंद स्पोर्टस् स्टेडियम के सामने, निकट कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन)

राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा : शनिवार, 27 जनवरी 2018, प्रातः 10.30 बजे से

रूटः रामलीला मैदान से मोन्ट फोर्ट स्कूल, एच ब्लॉक मार्केट, आर्य समाज अशोक विहार एफ ब्लॉक, डी-ब्लॉक, दीप मार्केट, प्रगति मार्केट, सनातन धर्म मंदिर फेज-2, सत्यवती कॉलेज, वजीरपुर वाटर टैंक से होते हुए रामलीला मैदान में दोपहर 1.30 बजे समापन। संयोजक-सुरेश आर्य, वीरेश आर्य, राकेश भटनागर, सुशील आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, प्रवीण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, ब्र. दीक्षेन्द्र, विश्वनाथ आर्य, ओमवीर सिंह, के.के. यादव, ईश आर्य, प्रदीप आर्य, विक्रांत चौधरी, प्रदीप जैन, विपिन मित्तल, भूदेव आर्य, चित्रा विद्यार्थी, जीवन लाल आर्य, सीमा-रोहित धीगड़ा, के.के सेठी, श्रीकृष्ण दहिया, अशोक गुप्ता, राकेश खुल्लर, अविनाश बंसल, देवमित्र आर्य, अशोक सरदाना, अजय अरोड़ा, राकेश मेहता, डिम्पल-नीरज भंडारी, नरेश विज, नरेन्द्र कस्तूरिया, ओमप्रकाश गुप्ता, हरिचन्द स्नेही

मुख्य यजमान : सर्वश्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, अरुण बंसल, प्रदीप तायल, डॉ. रमाकांत गुप्ता, एस.के. आहुजा

शुक्रवार 26 जनवरी, 2018

101 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रातः 10.45 बजे
युवा चेतना सम्मेलन	: 11.00 से 2.00
महिला शक्ति सम्मेलन	: 2.15 से 5.00
व्यायाम शक्ति प्रदर्शन	: 5.00 से 6.30
राष्ट्रीय कवि सम्मेलन	: रात्रि 7.30 से 10.00

शनिवार 27 जनवरी, 2018

यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 9.30
ध्वजारोहण	: प्रातः 10.00 बजे
राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा	: प्रातः 10.30 से 1.30
वेद-संस्कृत रक्षा सम्मेलन	: दोपहर 2.30 से 5.30
राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: रात्रि 7.00 से 10.00

रविवार 28 जनवरी, 2018

151 कुण्डीय विराट् यज्ञ	: प्रातः 8.30 से 10.30
ध्वजारोहण	: प्रातः 11.00 बजे
राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	: 11.30 से 2.30
शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन	: 2.30 से 5.00
कार्यकर्ता सम्मान समारोह	: सायं 5.00 से 5.30 बजे
धन्यवाद एवम् शांतिपाठ समापन	: सायं 6.00 बजे

दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य बन्धु अपने पधारने की संख्या व समय के बारे में व यज्ञमान बनने के इच्छुक 15 जनवरी 2018 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास का उचित प्रबंध किया जा सके। सम्पर्क : देवेन्द्र भगत-9958889970, संतोष शास्त्री-8178003873, सतीश शास्त्री-9891610320, काशीराम शास्त्री-9873454344, सौरभ गुप्ता-9971467978, अरुण आर्य-9818530543, वरुण आर्य-8586801154, विनोद कालरा-9899444347

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है कृपया दानराशी क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा ''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली'' के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि-लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी, मसाले आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें

निवेदक

डॉ. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई
राष्ट्रीय महामंत्री
दुर्गेश आर्य
राष्ट्रीय मंत्री
धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

यशोवीर आर्य
रामकुमार सिंह
कृष्णचन्द पाहूजा
सत्यभूषण आर्य
सुभाष बब्बर
स्वतंत्र कुकरेजा
आनन्दप्रकाश आर्य
रामकृष्ण शास्त्री
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

आनन्द चौहान
ठाकुर विक्रम सिंह
नवीन रहेजा
मायाप्रकाश त्यागी
प्रवीण तायल
अमित मान
विजयारानी शर्मा
अमीरचन्द रखेजा
स्वागत अध्यक्ष

डॉ. रिखबचन्द जैन
डॉ. लाजपत राय आर्य
अमरनाथ गोगिया
प्रेम कुमार सचदेवा
सत्यपाल गांधी
प्रि0 अन्जु महरोत्रा
योगराज अरोड़ा
एस.पी. सिंह

डॉ. महेन्द्र नागपाल
योगेश वर्मा, उप-महापौर
रवि चड्डा
सत्यवीर चौधरी
रमेशकुमारी भारद्वाज
ओम सपरा
ब्रह्मप्रकाश मान
लक्ष्मण पाहुजा

सुरेन्द्र कोहली
प्रेमपाल शास्त्री
गायत्री मीना
डॉ. गजराजसिंह आर्य
ओमप्रकाश यजुर्वेदी
चन्द्रप्रभा अरोड़ा
रविदेव गुप्ता
मनोहर लाल चावला
स्वागत मन्त्री

स्वागत समितिः सर्वश्री विकास गोगिया, अंजु जावा, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, रामलुभाया महाजन, वेदप्रकाश आर्य, धर्मदेव खुराना, प्रदीप गोगिया, सुशील बाली, गोपाल जैन, धर्मपाल परमार, डॉ. धर्मवीर आर्य, नरेश विज, ओमप्रकाश गुप्ता, अशोक गुप्ता, अविनाश बंसल, देवमित्र आर्य, उर्मिला आर्या, अर्चना पुष्पकरणा, अशोक सरदाना, बृजेश-पीतम गुप्ता, अजय अरोड़ा, राकेश मेहता, सुरेन्द्र मानकटाला, रमेश गाडी, अशोक आर्य, जवाहर भाटिया

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9868664800, 9871581398, 9013137070
E-mail: aryayouth@gmail.com **Website:** www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

आर्य महासम्मेलन तैयारी बैठक आर्य समाज,अमर कालोनी व अशोक नगर में सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 10 दिसम्बर 2017, 251 कुण्डीय विराट यज्ञ व आर्य महासम्मेलन की तैयारी हेतु दक्षिण दिल्ली क्षेत्र की बैठक श्री जितेन्द्र डावर की अध्यक्षता में आर्य समाज,अमर कालोनी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, चित्र में–आर्य नेता जितेन्द्र डावर के साथ, राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ,ओमवीरसिंह आर्य, सुभाष आर्य, कृष्णलाल राणा, प्रान्तीय संचालक रामकुमार सिंह व वेदप्रकाश शास्त्री। प्रि. अर्चना पुष्करना ने सम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया। द्वितीय चित्र–पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र की बैठक आर्य समाज, अशोक नगर, दिल्ली में श्री प्रकाशचन्द आर्य की अध्यक्षता में सोल्लास सम्पन्न हुई। डा.अनिल आर्य ने सम्मेलन को सफल बनाने का आह्वान किया। श्री अशोक आर्य, प्रवीन आर्या, संजीव आर्य, ओमप्रकाश चावला, मधु, अनिता, श्री जसूजा, अभिषेक द्विवेदी, मानवेन्द्र शास्त्री, गौरव झा जी आदि ने भी अपने विचार रखे।

आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1 व देव नगर का वार्षिक उत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 3 दिसम्बर 2017, आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। डा.जयेन्द्र आचार्य के प्रवचन हुए। विधायक राजेश गुप्ता, पार्षद योगेश वर्मा, डा.महेन्द्र नागपाल, डा.अनिल आर्य ने भी अपने विचार रखे। चित्र में–समाज के प्रधान श्री प्रेमकुमार सचदेवा को सम्मानित करते डा. जयेन्द्र आचार्य, डा.अनिल आर्य, मंत्री श्री जीवनलाल आर्य, श्री सत्यपाल गांधी, आनन्दप्रकाश आर्य आदि। द्वितीय चित्र–आर्य समाज, देव नगर, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ, स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचन हुए। समापन समारोह में डा. अनिल आर्य के साथ श्री कीर्ति शर्मा, मंत्री रमेश बेदी, राकेश बेदी व प्रधान श्री सुशील बाली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 25 युवक पूर्ण वेश भूषा में श्री राकेश आर्य शाखा अध्यक्ष के नेतृत्व में सम्मिलित हुए व पूरा सहयोग प्रदान किया।

आर्य समाज करोल बाग का उत्सव व राणाप्रताप बाग में बैठक सम्पन्न

रविवार, 10 दिसम्बर 2017,आर्य समाज,करोल बाग,दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य रघुवीर शास्त्री के प्रवचन हुए। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य सपत्निक यज्ञमान बने,साथ में श्री रामकुमार सिंह आर्य। प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र–उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल (पंजीकृत) की बैठक प्रधान श्री ओम सपरा की अध्यक्षता में आर्य समाज, राणाप्रताप बाग,दिल्ली में सम्पन्न हुई। युवा कार्यकर्ता उमंग आर्य का स्वागत करते हुए आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,डा. अनिल आर्य, ओम सपरा, राकेश सखूजा, रमेश डावर, नेत्रपाल आर्य। श्री भूदेव आर्य, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, प्रेमकुमार सचदेवा, विजय अरोडा, रामभरोसे शाह, ओमप्रकाश त्रेहन, गोपाल आर्य, सौरभ गुप्ता, देवेन्द्र भगत, सुदेश भगत, योगेश आर्य, सुधीर घई, संजय सपरा आदि ने भी अपने सुझाव दिये व सम्मेलन को सफल बनाने का आश्वासन दिया।

जम्मू में 18 ईसाईयों की घर वापिसी व हिसार में माता राजरानी की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

रविवार, 10 दिसम्बर 2017, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् जम्मू कश्मीर के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुभाष बब्बर के नेतृत्व में आर्य समाज, जानीपुर,जम्मू में 18 ईसाईयों ने वैदिक रीति से हिन्दु धर्म अपनाया व घर वापिस आ गये। महामंत्री रमेश खजूरिया ने कुशल संयोजन किया। द्वितीय चित्र–केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रान्तीय उपाध्यक्ष श्री ईश आर्य की पूज्य माता श्रीमती राजरानी की विशाल श्रद्धाजंलि सभा पटेल नगर पार्क हिसार में सम्पन्न हुई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी,डा.अनिल आर्य,आचार्य प्रमोद शास्त्री, अमित शास्त्री,आचार्य रविदत शास्त्री, पंतजलि हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी राकेश मितल,आचार्य रामस्वरूप जी, श्री सत्यपाल आर्य, अजय एलावादी, रामकुमार सिंह आर्य, माधव सिंह, विश्वनाथ आर्य,गोपाल आर्य आदि ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। स्वामी रामदेव जी ने अपना सन्देश टेलीफोन द्वारा प्रसारित किया। युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धाजंलि।

अपीलः

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड -SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

सूर्य निकेतन में भजन संध्या 24 दिसम्बर को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में माता सुशीला देवी व पं. हरिदेव ''आर्य वीर'' की पुण्य स्मृति में यज्ञ व भव्य भजन संध्या का कार्यक्रम रविवार 24 दिसम्बर 2017 को सायं 4 बजे से रात्री 7 बजे तक आर्य समाज, सूर्य निकेतन, पूर्वी दिल्ली में होगा। आचार्य महेन्द्र भाई जी यज्ञ करवायेंगे व पं. लक्ष्मीकांत कंठपाल के मधुर भजन होंगे। सभी आर्य जनों से अनुरोध है कि सपरिवार पंहुच कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें

– यशोवीर आर्य, प्रधान **–डा.अनिल आर्य,संयोजक**

गाजियाबाद में आर्य कार्यकर्ता बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् उत्तर प्रदेश की विशाल आर्य कार्यकर्ता बैठक रविवार, 31 दिसम्बर 2017 को प्रातः 11.30 बजे आर्य समाज,राज नगर, गाजियाबाद में आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी की अध्यक्षता में होगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य भी मार्ग दर्शन प्रदान करेंगे। सभी आर्य जन/आर्य युवक समय पर पंहुचे

–आनन्दप्रकाश आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष **– प्रवीन आर्य,प्रान्तीय महामंत्री**

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970